International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 01-02-2025, Accepted: 02-03-2025, Published: 18-03-2025
Volume 11, Issue 2, 2025, Page No. 12-14

''युवाओं में नशाखोरी का कारण एवं परिणामः एक अध्ययन''

जानकी यादव
अतिथि व्याख्याता, समाजशास्त्र विभाग, शासकीय लोचन प्रसाद पाण्डेय महाविद्यालय सारंगढ़, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
आदिकाल से ही मादक द्रव्यों के व्यसन का रिवाज मनुष्यों में चला आ रहा है। जिसमें चाहे शराब हो या अन्य मादक पदार्थ क्यों न हो। आर्य लोग सोमरस का पान करते थे।
भारतीयों में तो 'सुरापान' को आध्यात्मिकता के साथ जोड़ने का भी मिथक चली आ रही है। अर्थवेद में भांग का प्रयोग 'विजया' के रूप में प्रयोग तथा भोज्य रत्नावली चटक संहिता व अन्य प्राचीन आयुर्वेद के ग्रन्थों में सुरा बनाने का विधान भी है।
भारत में मद्यपान एवं मादक द्रव्य व्यसन का प्रयोग इतना बढ़ गया है कि यह जहरीली पदार्थो से लाखों, करोड़ो रूपये की बिक्री रोज होती है। भारत में लगभग रोज 80 लाख गैलन की बिक्री होती है। सबसे ज्यादा सरकार को यदि राजस्व प्राप्त होता है, तो शराब से तथा अन्य मादक पदार्थों से होता है। मादक पदार्थों के आयात के कारण भी व्यसनी हुए हैं, लोग। आज–कल महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं में नशा खोरी ज्यादातर देखने को मिल रहा है। इसका कारण, सामाजिक प्रतिष्ठा, नशा का शिष्टाचार जीवन शैली का प्रतीक बन जाना, हिप्पी संस्कृति, चिंता रहित जीवन जीने की लालसा, मानसिक शांति की खोज, दवाओं के रूप में मनोवैज्ञानिक, आर्थिक, शारीरिक, सामाजिक, मानसिक तनाव, मानसिक विकास, उपचार, पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव सामाजिक संबंधों में बिखराव, पारिवारिक स्नेह का अभाव आदि कारण हैं। इसके बहुत सारे दुष्परिणाम भी हैं – वैयक्तिक विघटन, दुर्घटना, दुर्व्यवहार कार्य क्षमता का प्रभावित होना सामाजिक एवं पारिवारिक विघटन गरीबी, बेरोजगारी, अपराध बाल अपराध, गणिकावृत्ति, आत्महत्या आदि अनेक सामाजिक व्याधिकीय की स्थिति उत्पन्न होती है। मादक द्रव्य व्यसन से व्यक्ति एवं समाज दोनों ही खोखला हो जाता है, अतः सरकार को भी चाहिए कि वह पूर्ण नशा बंदी करा कर देश को बचाने का प्रयास करें।

मूलशब्दः व्यसन, मादक द्रव्य, सुरा, जहरीली दवा, गांजा, अफीम, सत्कार, विजया।

आदिकाल से चला आ रहा मादक द्रव्य–व्यसन चाहे वह आफीम, गांजा, चरस, मारिजुआना, भांग कोकीन, माजून, ब्राउन सुगर, एम्पिरीन या मद्यपान कुछ भी क्यों न हो आज भी विभिन्न व्यक्तियों द्वारा किया जा रहा है। आर्य लोग मद्य को 'सोमरस' के नाम से पुकारते थे। 8 वीं व 9 वीं सदी में नशीली वस्तुओं का सेवन फैशन के रूप में किया जाता था, जो आज भी विद्यमान है। मद्य का उपयोग आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक, क्रीडात्मक उत्सव त्यौहारों, विवाह के अवसर, अतिथि सत्कार, शुभकामना, सौदा तय होना आदि में भी किया जाता है, कुछ मादक पदार्थ दवाई के रूप में एवं सिपाहियों के हौसला बुलंद करने और नर्तकों की प्रसन्नता एवं कार्य–क्षमता बढ़ाने के लिए भी किया जाता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार – ''मद्यपान नशे की वह स्थिति है, जो किसी भी रूप में मादक पदार्थ के निरंतर सेवन से उत्पन्न होती है। जिससे थोड़ी देर के लिए नशा चढ़ता है या मनुष्य सदा ही नशे में चूर रहता है और जो व्यक्ति एवं समाज दोनो के लिए हानिकारक है।''
नशीले पदार्थों के सेवन से उत्पन्न अनेक सामाजिक मानसिक व्याधियों के जन्म देने में एक मात्र मनुष्य ही उत्तरदायि है। आज शायद ही विश्व का कोई भूखण्ड बचा होगा जहां मादक–द्रव्य व्यसन की विभिषिका नहीं है। इसी कारण पूरे विश्व में मादक द्रव्य व्यसन एक चुनौती बनकर विश्व पटल में छायी हुई है।
एक बार कालिदास ने शराब के घट की ओर इशारा करके पूछा, कि इस कलश में क्या है। उन्हें उत्तर मिला–

''मन्दः प्रमादः कलश्च निद्रा,
बुद्धिक्षयो धर्म विपर्ययश्च।
सुखाय कन्था नरकस्य पन्था,
अष्टावनर्थाः घटके वसन्ति।''

(अर्थात् इस घट में मादकता प्रमाद, कलह, निद्रा, बुद्धि का नाश, धर्म का नाश, सुख की समाप्ति और नरक का मार्ग, आदि आठ दोष भरे पड़े हैं।)
विभिन्न वर्षों के आंकड़ो से यह स्पष्ट हो चुका है कि केवल भारत वर्ष में ही हजारों लाखों की संख्या में लोग विभिन्न मादक द्रव्य व्यसन के वशीभूत है, एवं लाखों की संख्या में वे इस पृथ्वी पर नारकीय जीवन जीते हुए समय से पूर्व काल के गाल में ग्रसित हो रहे हैं। इस भीषण विभिषिका से बचने के लिए विभिन्न कारणों को खोज कर युवाओं एवं किशोरो आदि को अवगत कराना होगा, चाहे चल–चित्र, गली नुक्कड़, नाटक, टी.वी., पत्र–पत्रिका, मोबाईल सिनेमा आदि कोई भी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष माध्यम क्यों न हो ?
शराबवृत्ति वह स्थिति है जिसमें व्यक्ति मद्यपान का आदि हो जाता है, और वह शराब के बिना नहीं रह सकता और जिसके परिणाम स्वरूप वह अनेक सामाजिक आर्थिक, शारीरिक, मनोवैज्ञानिक समस्याओं का सामना करता है।
मादक द्रव्य से तात्पर्य है वह पदार्थ जिसके सेवन से व्यक्ति मदमस्त हो जाता है तथा व्यक्ति की क्रिया एवं प्रतिक्रियाएं दोनों ही प्रभावित होती है। इसे 'संवेदन मंदक' औषधि भी कहा जाता है।
अतः मादक द्रव्य वे रासायनिक पदार्थ है जो व्यक्ति के मनः स्थिति, स्नायुमण्डल, शारीरिक क्रिया तथा अनुभवजन्मता व चेतनाशक्ति को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। यदि कोई व्यक्ति इन पदार्थों को लेना बंद कर दे तो उस व्यक्ति का शारीरिक एवं मानसिक संचालन बंद हो जाती है और वह इन पदार्थों के ऊपर निर्भर हो जाता है।

मादक पदार्थों के अंतर्गत'– गांजा, हशीश, हेरोइन, कोकीन, धूम्रपान आदि पदार्थ आते हैं। इन्हें 'बुलंद द्रुत गति पर होना' आमोद यात्रा एवं आनन्दोत्कम्प भी कहा जाता है।

मादक पदार्थों के प्रकार – मादक पदार्थों के विभिन्न प्रकार हैं, जो निम्नलिखित है।

1. **अवसाद मादक पदार्थ–** इन पदार्थों के अंतर्गत (नेम्बुटल, सिकोनाल, सेनोरिल, एमिटाल) आते हैं। ये पदार्थ पीड़ा नाशक एवं शांति दायक पदार्थ है।

2. **भ्रान्ति जनक या मासिक मादक पदार्थ–** इन पदार्थों में एल. एस.डी. मुख्य है। जिसके सेवन से व्यक्ति स्वप्न की दुनिया में जीता है और वह स्वप्निल दुनिया में मदमस्त रहता है।

3. **उत्तेजक मादक पदार्थ–** इसके अंतर्गत कोकीन मैथेडीन, डेक्सीन और कैफीन आदि उत्तेजक पदार्थों की श्रेणी में आते हैं, ये सभी पदार्थ निंद्रा, उदासी एवं थकान को दूर तथा शारीरिक स्फूर्ति प्रदान करता है।

4. **निश्चेतक मादक पदार्थ–** इसके अंतर्गत भांग, अफीम, बार–बिच्युरेटस आदि पदार्थ आते हैं तथा इसके सेवन से व्यक्ति उदासी और चिंता से दूर तथा खुश रहता है।

अन्य मादक पदार्थ – मादक पदार्थ के और अन्य प्रकार भी हैं, जो निम्नलिखित हैं।

1. **शराब –** गुड़, जौ, चांवल, महुआ, काजू, अंगूर आदि पदार्थों से बनता है, उसे शराब कहते हैं। शराब का प्रयोग लोग थकान दूर करने और मन की उदासी को भगाने, उत्सव, तीज, त्यौहार, अतिथि सत्कार, देवी–देवता को चढ़ावा देने आदि में प्रयोग करते हैं।

2. **अफीम –** अफीम का प्रयोग पानी में घोल कर अथवा उसकी गोलियां बना कर किया जाता है। इसके सेवन से पाचन संबंधी दोष, कफ, दर्द, अनिद्रा आदि दूर होता है।

3. **चरस –** चरस के पत्तों और फूलों का प्रयोग नशे के लिये किया जाता है। किंतु अब इसके प्रयोग पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। अब व्यक्ति चरस के जगह गांजा पीने लगा है।

4. **गांजा व भांग –** एक पेड़ की पत्तियां भांग एवं फूल गांजा कहलाता है। भांग का प्रयोग पानी में घोल कर गोलियां बनाकर तथा गांजे को तम्बाकू की तरह चिलम में भरकर पीया जाता है। इसके पीने से व्यक्ति हरदम तंद्रा अवस्था में रहता है।

5. **कोकीन –** कोकीन, कोकी नामक पेड़ की पत्तियों से प्राप्त किया जाता है। इसका प्रयोग पहले धनाड्य धरानों के द्वारा किया जाता था तथा दांत के दर्द में भी इसका प्रयोग किया जाता है।

6. **हेरोइन –** इसका ज्यादातर प्रयोग विद्यार्थियों एवं नवयुवकों द्वारा किया जाता है, यह भी एक नशीला पदार्थ की श्रेणी में आता है।

7. **ब्राउन शुगर –** इसका प्रयोग आज के छात्रों तथा महानगरों के लोगों द्वारा अत्यधिक मात्रा में किया जाता है।

ऊपर वर्णित पदार्थों के अलावा बीड़ी, सिगरेट, गुटखा, खैनी तथा तम्बाकू आदि की भी व्यक्ति सेवन करता है, जो कि व्यक्ति, परिवार, समाज तथा राष्ट्र सभी के लिए हानिकारक है।

उद्देश्य

विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं एवं विभिन्न वर्षों के आंकड़ो का अवलोकन करने पर यह पाया गया कि आज व्यक्ति आधुनिकता एवं पाश्चात्य सभ्यता में तथा नगरीयकरण एवं औद्योगिकरण के कारण और विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक, पारिवारिक एवं आर्थिक कारणों के कारण आज के युवक युवतियों तथा साथ ही प्रौढ़, किशोर एवं वृद्ध व्यक्ति भी इसमें शामिल हैं, जो मादक द्रव्य के व्यसनी हो चुके हैं और वे सबके सब समय से पहले काल के गाल में ग्रसित हो रहे हैं और विभिन्न समस्याओं एवं दुर्घटना के शिकार हो रहे हैं।

आज नशाखोरियों को इसके दुष्परिणामों से अवगत कराना तथा समाज में एक सभ्य एवं सुशिक्षित तथा स्वस्थ्य नागरीक बन कर जीवन जीये यही विचार है।

मादक द्रव्य व्यसन के अनेक दुष्परिणाम हैं जैसे– कैंसर, गठिया बात, चर्मरोग, अपच, आंख के रोग, अपस्मान, वास कष्ट, क्षय रोग, डिफ्थीरिया, बांझपन, पीलिया, टी.वी., सनकी पन, मूर्छा, पागलपन, मिरगी, नाड़ी का सूजन, पक्षाघात, चित्र विभ्रम, संदेह उत्तेजना, स्मृति नाश आदि होता है। इन सबों से अवगत कराना तथा दिग्भ्रमित होने से बचाना ये सब उद्देश्य है। मद्यपान एवं मादक द्रव्य व्यसन से अपराध, गणिकावृत्ति, जुआखोरी, चोरी, बाल अपराध, हत्या आदि विपथ गमन व्यवहार हैं जो ये सब होता है। जिसमें समाज एवं परिवार में नियमहीनता की स्थिति उत्पन्न होती है तथा समाज असंगठित हो जाता है। इन सभी सामाजिक बुराईयों से बचाना उद्देश्य है।

नशाखोरी के कारण

नशाखोरी के बहुत सारे कारण हैं जिसे निम्न पंक्ति में दर्शाया जा रहा है।

1. **वैयक्तिक कारण –** जो व्यक्ति मानसिक रूप से उद्विन रहता है तथा चिन्ता, असफलता, संघर्ष तनाव थकावट निराशा, उपेक्षा तिरस्कार आदि के कारण व्यक्ति शराब या मादक द्रव्यों का सेवन करता है।

2. **अतिथि सत्कार –** अतिथियों के सत्कार हेतु भी व्यक्ति कोई भी मादक पदार्थ या सुरा परोसता है।

3. **सामाजिक प्रतिष्ठा के कारण –** आज–कल उसी व्यक्ति की प्रतिष्ठा बढ़ती है जो किसी भी प्रकार का मादक द्रव्यों का सेवन करता है। विवाह, जन्मोत्सव या सांस्कृतिक समारोह आदि अवसरों पर मादक पदार्थों का उपयोग किया जाता है।

4. **फैशन –** मादक पदार्थों का सेवक आज व्यक्ति फैशन के रूप में भी कर रहा है।

5. **आपत्ति के कारण –** आपत्ति के कारण भी व्यक्ति शराब या मादक पदार्थों का सेवन करता है।

6. **दवा के रूप में –** कुछ व्यक्ति मादक पदार्थों का सेवन दवा के रूप में भी बहुत कम मात्रा में लेता है।

7. **राजनीतिक कारण –** चुनाव के समय अपने प्रत्याशियों को जीताने के लिए शराब आदि को बांटते हैं या फिर जीत की खुशी मनाने के लिए भी सुरा का पान किया जाता है।

8. **आर्थिक कारण –** जिसके पास ज्यादा पैसा रहता है तो उस स्थिति में भी तथा जिसके पास पैसा का अभाव रहता है तो भी व्यक्ति गरीबी के कारण भी मादक पदार्थों का सेवक करता है।

9. **मनोवैज्ञानिक कारण** – कभी कभी व्यक्ति मानसिक संघर्ष की स्थिति में भी रहता है तो तथा तनाव, संघर्ष की स्थिति में मादक द्रव्यों का सेवन करता है।

10. **नगरीकरण** – आज यदि सबसे ज्यादा नशाखोरी होती है तो वह है नगरी क्षेत्रों में ज्यादातर मादक पदार्थों का सेवन किया जाता है।

11. **शारीरिक कारण** – व्यक्ति शारीरिक दर्द से छुटकारा पाने के लिए भी मादक पदार्थों का सेवन करते हैं।

नशाखोरी का परिणाम एवं दुष्परिणाम

किसी भी तरह के मादक पदार्थों का यदि लम्बे समय तक सेवन किया जाता है तो उसका विभिन्न क्षेत्रों पर दुष्प्रभाव एवं परिणाम गलत ही पड़ता है। जो निम्नलिखित है–

1. **शारीरिक प्रभाव** – यदि किसी भी मादक पदार्थ का लम्बे समय तक सेवन किया जाता है तो गठिया बात, नाड़ी दुर्बलता होना पेलेग्रा, बेहोशी पाचन संबंधी रोग होना आदि दुष्परिणाम सामने आता है।

2. **पारिवारिक विघटन** – मादक पदार्थ के अधिक सेवन से पारिवारिक समस्याऐं भी आती है। नशेड़ी व्यक्ति अपने तथा अपने परिवार के लिए कुछ नहीं कर पाता ऐसे व्यक्ति में कुछ ऐसे लक्षण होते हैं जिनके कारण वे विवाह के अयोग्य होते हैं। ये व्यक्ति में आदर्शहीनता तथा आक्रामकता के गुण भी पाये जाते हैं।

3. **वैयक्तिक विघटन** – पारिवारिक विघटन के साथ–साथ वैयक्तिक विघटन भी होता है। नशेड़ी व्यक्ति सामान्य जीवन नहीं जी पाता। वे व्यक्ति समाज में अनुकूलन स्थापित नहीं कर पाता तथा सामाजिक प्रतिमानों की अवहेलना भी करता है।

4. **बेकारी** – कोई व्यक्ति नशीली दवाओं का सेवन अत्यधिक करता है तो उसकी कार्य क्षमता भी प्रभावित होती है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति को नौकरी से भी निकाल दिया जाता है। जिससे बेकारी बढ़ती है।

5. **गरीबी** – कोई व्यक्ति को उसके नौकरी से निकाल देने से गरीबी में भी वृद्धि होने लगती है।

6. **कार्य क्षमता का प्रभावित होना** – मादक पदार्थों का सेवन करने से कार्यक्षमता में भी गिरावट आने लगता है तथा दुर्घटना आदि भी घटित होती है।

7. **दुर्व्यवहार** – मादक पदार्थों के अत्यधिक सेवन से भी व्यक्ति दुर्व्यवहार करने लगता है और वह बाल अपराध, अपराध, वेश्यावृत्ति, जुआखोरी, चोरी, यौन अपराध, हत्या वेश्यावृत्ति तक आदि दुर्व्यवहार करता है।

8. **मानसिक बीमारी** – मद्यपान एवं मादक द्रव्य व्यसन से स्नायु तंत्र का नष्ट हो जाना, बौद्धिक एवं भावात्मक शक्ति क्षीण हो जाना तथा मूर्छा, पागलपन, मिरगी, नाड़ी का सूजन, पक्षाघात आदि मानसिक रोग हो सकता है।

9. **सामाजिक समस्या** – ज्यादातर मादक द्रव्य एवं सुरापान के सेवन से व्यक्ति को अपने मित्रों परिवार के सदस्यों एवं समाज तथा वह अपने आप को पृथक पाता है और यही पृथकता व्यक्ति को असुरक्षित महसूस करता है। तथा ऐसी स्थिति में प्राथमिक एवं वैयक्तिक सम्बन्ध टूट जाने का खतरा हो जाता है।

10. **सामाजिक विघटन** – नशे के कारण व्यक्ति सामाजिक एवं कानूनी जो नियम पाये जाते हैं उसको वह तोड़ देता है और मर्यादाऐं टूटने के कारण समाज में भ्रष्टाचार तथा चारित्रिक पतन होने लगता है।

11. **नियम हीनता उत्पन्न होना** – नशे के कारण समाज एवं परिवार में नियमहीनता की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। और सामाजिक नियंत्रण शीथिल होने लगता है।

12. **पारिवारिक विघटन** – इलियर ने कहा– ''शराबी व्यक्ति के लिए बोतल पत्नी का स्थान ले लेती है। अर्थात् बीबी बच्चे की जगह बोतल ले लेती है और व्यक्ति बोतल मय हो जाता है।''

इस तरह से मादक द्रव्य व्यसन तथा सुरापान के बहुत सारे दुष्परिणाम हैं। मादक पदार्थों के व्यसन से व्यक्ति और समाज को हानि ही होती है लाभ नहीं।

निष्कर्ष

मद्यपान एवं मादक द्रव्य व्यसन व्यक्ति और समाज दोनों को अंदर से खोखला कर देती है इससे हम सभी को बचना चाहिए तथा सरकार को भी पूर्ण नशा बंदी लगा कर देश को बचाने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि समाज में मादक पदार्थ ही नहीं रहेंगे तो नशा कहां से होगी।

हालांकि भारत सरकार के द्वारा विभिन्न योजना बनाकर नशा बंदी का उपाय किया जा रहा है लेकिन इसके कारण परिणाम सामने नहीं आ पा रहा है।

नशा बंदी को पाठ्य पुस्तक में भी सम्मिलित कर इसके दुष्परिणाम से अवगत कराना होगा। तथा बच्चों को बचपन से ही चारित्रिक निर्माण करना होगा। अभी भी समय है जब युवाओं की ऊर्जा को व्यसन के दलदल से निकाल कर रचनात्मक कार्यों के लिए सक्रिय संरक्षित और सुरक्षित कर सकते हैं और ज्यादातर युवाओं के कल को बचा सकते हैं। ताकि वे हमारे देश का विकास कर सकें और अपनी ऊर्जा को सही दिशा दे सके।

संदर्भ ग्रंथ

1. एम.एल. गुप्ता, डी.डी. शर्मा, समाजशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा (भारत) 2001
2. डॉ. डी.एस. बघेल, डॉ. किरण बघेल समाजशास्त्र कैलाश पुस्तक सदन भोपाल (भारत) 2019
3. डॉ. अशोक पाटिल, डॉ. एस.एस. भदौरिया म.क. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भारत 2000
4. डॉ. संजीव महाजन – अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली भारत 2010